# विमानयानं रचयाम
## (हम वायुयान बनायें)

प्रस्तोता : रवि उपाध्यायः
-प्र.स्ना.शि. (संस्कृत/हिन्दी)
परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय-१, तारापुर

# भावार्थ एवं उद्देश्य

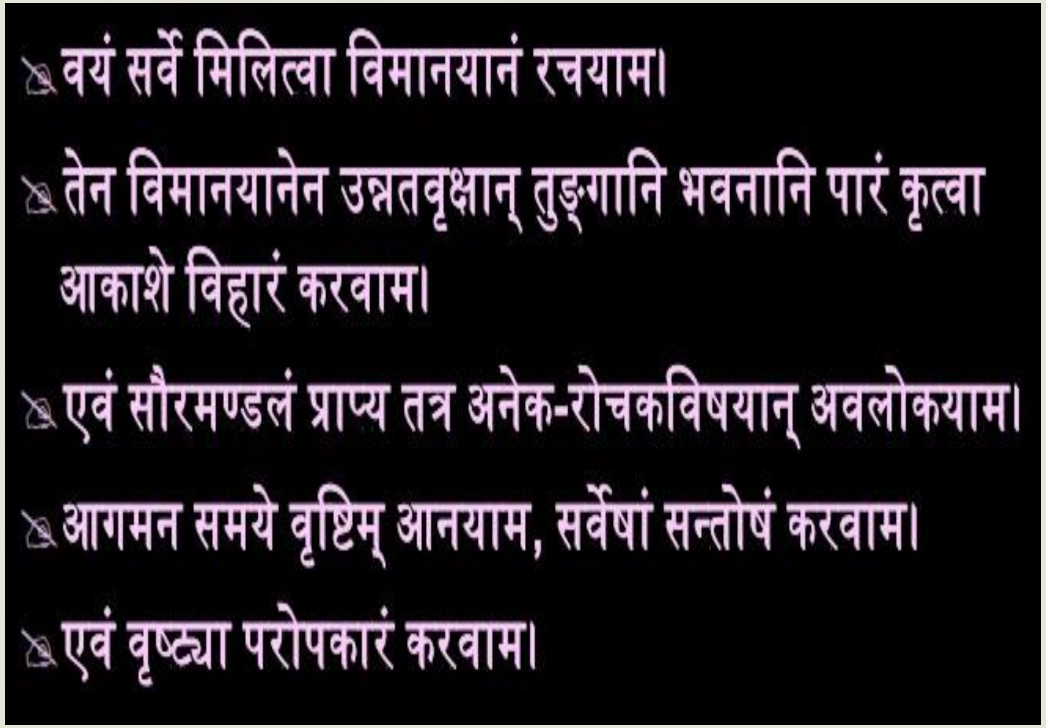


- हम सभी मिलकर वायुयान (विमान) बनायें|
- उस विमान के द्वारा हम ऊँचे-ऊँचे वृक्षों एवं भवनों को लाँघकर आकाश में घूमें |
- सौरमण्डल में पहुँचकर वहाँ के अनेक रोचक विषयों को देखें |
- आते समय बादल (वर्षा) साथ लायें और सभी को शान्ति दें |
- इस वर्षा से हम परोपकार करें |

# भावार्थ एवं उद्देश्य

- प्रस्तुत पाठ में कवि बच्चों को कुछ नया करने को प्रोत्साहित करते हुए दिखते हैं|
- सौरमण्डल जैसे अनेक विषयों को हमें रूचि से एवं विभिन्न रोचक उपायों से पढ़ने-पढ़ाने  का प्रयास करना चाहिए |
- जिस प्रकार कविता में बच्चे अपने विमान से किसानों के लिए बादलों की श्रृंखला लाकर उनकी सहायता करना चाहते हैं उसी तरह किसी अन्य प्रकार से हमें भी परोपकार करना चाहिए |

# शब्दार्थ

## शब्दार्थाः

| | | | |
|---|---|---|---|
| विमानयानम् | - | हवाई जहाज | aeroplane |
| रचयाम | - | (हम) बनाएँ | should make |
| विपुले | - | विस्तृत (आकाश) में | expansive |
| विमले | - | निर्मल (आकाश) में | clear |
| वायुविहारम् | - | वायुयात्रा (आकाश में यात्रा) | flying in the sky |
| करवाम | - | (हम) करें | should do |
| उन्नतवृक्षम् | - | ऊँचे वृक्ष को | high tree |
| तुङ्गम् | - | ऊँचा | high |
| क्रान्त्वा | - | पार करके | crossing over |
| याम | - | (हम) चलें | should go |
| हिमवन्तं सोपानम् | - | बर्फ की सीढ़ी को | ice-ladder |
| चन्दिरलोकम् | - | चन्द्रलोक को | moonland |

# शब्दार्थ

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रविशाम | – | (हम) प्रवेश करें | should enter |
| गणयाम | – | (हम) गिनें | should count |
| चित्वा | – | चुनकर | picking up |
| मौक्तिकहारम् | – | मोतियों के हार को | pearl neckless |
| अम्बुदमालाम् | – | बादलों की माला को | cloud-garland |
| अम्बरभूषाम् | – | आकाश की शोभा को | beauty of sky |
| प्रतियाम | – | (हम) लौटें | should retu |
| जनयाम | – | (हम) उत्पन्न करें | should crea |
| आदाय | – | लेकर | taking |

# अभ्यास

**2. कोष्ठेकान्तर्गतेषु शब्देषु तृतीया-विभक्तिं योजयित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-**

अकारान्तपुंलिङ्गशब्दः

| तृतीयावि. | चन्द्रेण | चन्द्राभ्याम् | चन्द्रैः |
|---|---|---|---|
| | (एण) | (आभ्याम्) | (ऐः) |

यथा - नभः चन्द्रेण शोभते। (चन्द्र)

तृतीयाविभक्तिः विमलेन विमलाभ्याम् विमलैः

(क) सा ..विमलेन.. जलेन मुखं प्रक्षालयति। (विमल)

तृतीयाविभक्तिः विमानयानेन विमानयानाभ्याम् विमानयानैः अकारान्त-नपुंसकलिङ्गशब्दः

(ख) राघवः ..विमानयानेन... विहरति। (विमानयान)

तृतीयाविभक्तिः मौक्तिकहारेण मौक्तिकहाराभ्याम् मौक्तिकहारैः अकारान्त-पुंलिङ्गशब्दः

(ग) कण्ठः मौक्तिकहारेण. शोभते। (मौक्तिकहार)

तृतीयाविभक्तिः सूर्येण सूर्याभ्याम् सूर्यैः

(घ) नभः ..सूर्येण. प्रकाशते। (सूर्य) अकारान्त-पुंलिङ्गशब्दः

तृतीयाविभक्तिः अम्बुदमालया अम्बुदमालाभ्याम् अम्बुदमालाभिः आकारान्त-स्त्रीलिङ्गशब्दः

(ङ) पर्वतशिखरम् अम्बुदमालया.. आकर्षकं दृश्यते। (अम्बुदमाला)

चन्द्र (मूलशब्दः)

| | एकवचनम् |
|---|---|
| प्रथमावि. | चन्द्रः |
| द्वितीयावि | चन्द्रं |
| तृतीयावि. | चन्द्रेण |
| चतुर्थीवि. | चन्द्राय |
| पञ्चमीवि. | चन्द्रात् |
| षष्ठीवि. | चन्द्रस्य |
| सप्तमीवि. | चन्द्रे |
| संबोधनम् | हे! चन्द्र |

# ३. भिन्नवर्गस्य पदं चिनुत -

**यथा – सूर्यः, चन्द्रः, अम्बुदः, शुक्रः**

(क) पत्राणि, पुष्पाणि, फलानि, मित्राणि

(ख) जलचरः, खेचरः, भूचरः, निशाचरः

(ग) गावः, सिंहाः, कच्छपाः, गजाः

(घ) मयूराः, चटकाः, शुकाः, मण्डूकाः

(ङ) पुस्तकालयः, श्यामपट्टः, प्राचार्यः, सौचिकः

(च) लेखनी, पुस्तिका, अध्यापिका, अजा

**अम्बुदः**

- मित्राणि
- निशाचरः
- कच्छपाः
- मण्डूकाः
- सौचिकः
- अजा

# अभ्यास

**4. प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत –**

क. के वायुयानं रचयन्ति?
राघवः, माधवः, सीते, ललिता च वायुयानं रचयन्ति।

ख. वायुयानं कीदृशं वृक्षं भवनं च क्रान्त्वा उपरि गच्छति?
वायुयानं उन्नतवृक्षं तुङ्गं भवनं च क्रान्त्वा उपरि गच्छति।

ग. वयं कीदृशं सोपानं रचयाम?
वयं हिमवन्तं सोपानं रचयाम।

घ. वयं कस्मिन् लोके प्रविशाम?
वयं चन्दिरलोके प्रविशाम।

ङ. आकाशे काः चित्वा मौक्तिहारं रचयाम?
आकाशे विविधाः सुन्दरताराः चित्वा मौक्तिहारं रचयाम।

च. केषां गृहेषु हर्षं जानयाम?
दुःखित-पीडित-कृषिकजनानां गृहेषु हर्षं जानयाम।

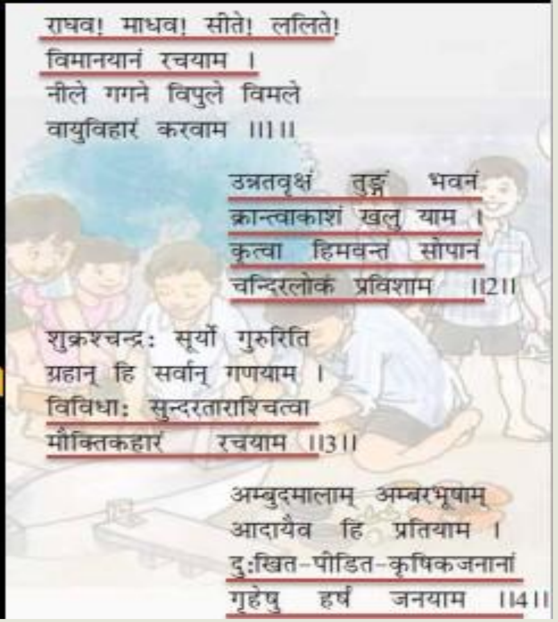

# ५. विलोमपदानि योजयत -

| | |
|---|---|
| उन्नतः | पृथिव्याम् |
| गगने | असुन्दरः |
| सुन्दरः | अवनतः |
| चित्वा | शोकः |
| दुखी | विकीर्य |
| हर्षः | सुखी |

# अभ्यास

**6. समुचितैः पदैः रिक्तस्थानानि पूरयत-**

| विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|---|
| प्रथमा | भानुः | भानू | भानवः |
| द्वितीया | गुरूम् | गुरू | गुरून् |
| तृतीया | पशुना | पशुभ्याम् | पशुभिः |
| चतुर्थी | साधवे | साधुभ्याम् | साधुभ्यः |
| पञ्चमी | वटोः | वटुभ्याम् | वटुभ्यः |
| षष्ठी | विभोः | विभ्वोः | विभूनाम् |
| सप्तमी | शिशौ | शिश्वोः | शिशुषु |
| सम्बोधन | हे विष्णो! | हे विष्णू! | हे विष्णवः! |

| एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---|---|---|
| गुरुः (उः) | गुरू (ऊ) | गुरवः (अवः) |
| गुरुम् (उम्) | गुरू (ऊ) | गुरून् (ऊन्) |
| गुरुणा (उना/उणा) | गुरुभ्याम् (उभ्याम्) | गुरुभिः (भिः) |
| गुरवे (अवे) | गुरुभ्याम् (उभ्याम्) | गुरुभ्यः (उभ्यः) |
| गुरोः (ओः) | गुरुभ्याम् (उभ्याम्) | गुरुभ्यः (उभ्यः) |
| गुरोः (ओः) | गुर्वोः (वोः) | गुरूणाम् (ऊणाम्/उनाम्) |
| गुरौ (औ) | गुर्वोः (वोः) | गुरुषु (षु) |
| हे गुरो! (ओ) | हे गुरू! (ऊ) | हे गुरवः! (अवः) |

# अभ्यास

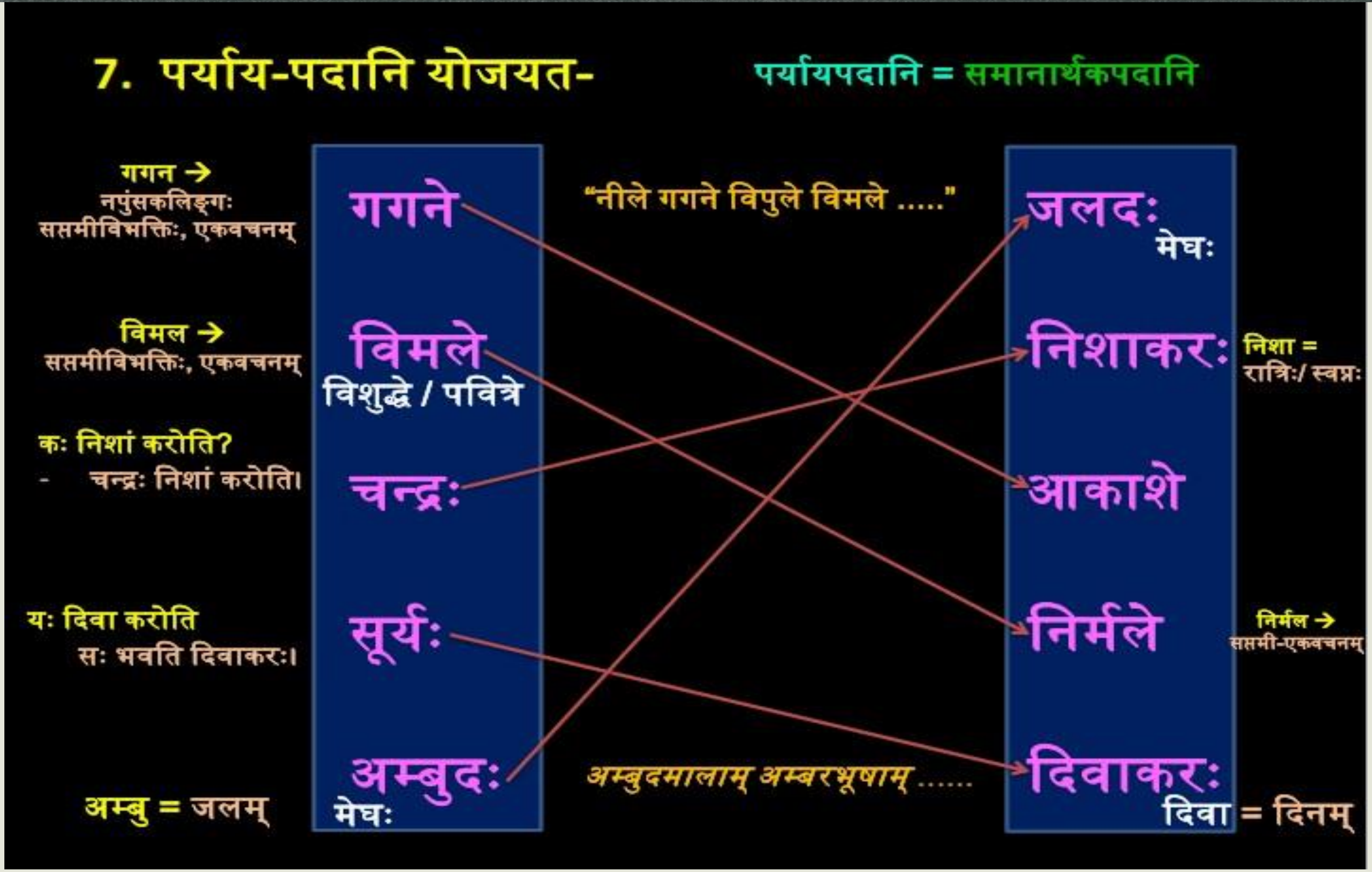

7. पर्याय-पदानि योजयत-
पर्यायपदानि = समानार्थकपदानि
गगन →
नपुंसकलिङ्गः
सप्तमीविभक्तिः, एकवचनम्
विमल →
सप्तमीविभक्तिः, एकवचनम्
कः निशां करोति?
- चन्द्रः निशां करोति।
यः दिवा करोति
सः भवति दिवाकरः।
अम्बु = जलम्
गगने
विमले
विशुद्धे / पवित्रे
चन्द्रः
सूर्यः
अम्बुदः
मेघः
"नीले गगने विपुले विमले ....."
अम्बुदमालाम् अम्बरभूषाम् ......
जलदः
मेघः
निशाकरः
निशा =
रात्रिः/ स्वप्नः
आकाशे
निर्मले
निर्मल →
सप्तमी-एकवचनम्
दिवाकरः
दिवा = दिनम्